Review Of Research ISSN : 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | April-2015 Available online at www.ror.isrj.org

'' आदिकालीन नाथ सम्प्रदाय का उदय एवं नाथ साहित्य की ऐतिहासिक विवेचना ''

मोहन सिंह नाथ
प्रवक्ता हिन्दी रा.इ.का. नारयणनगर सिंनाई, जिला–चमोली, गढवाल, उत्तराखण्ड

Short Profile

Mohan Singh is working as a Lecturer at Department of Hiindi in Ra.E.Ka. Narayan Nagar Sinai, Chamoli Gadwal, Uttarakhand. He has completed M.A., B.T.C., B.Ed., NET. He has teaching experience of 15 years.

सारांश :–

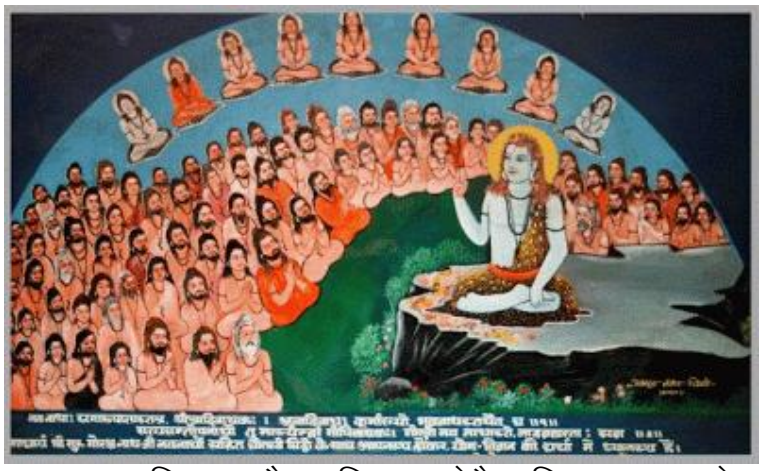

नाथ साहित्य अपनी मौलिक क्षमता के कारण महत्वपूर्ण है। इनकी रहस्यपरक अनुभूतियों में तत्कालीन जनजीवन की सहज छाप मिलती हैं । धार्मिक विकास की यह श्रृंखला पूर्ववर्ती साहित्य के अबाध क्रम को परवर्ती कई शताब्दियों तक गति देती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नाथ सिद्ध साहित्य की प्रवृतियॉ मानव मन के भीतर पक्षों को सहज ही उद्घाटित ही करता है। पाश्चात्य विद्वान और प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड के दर्शन को यदि नाथ–साहित्य की पृष्ठभूमि में घटित किया जाय तो व्यक्ति मन को छोडकर एक सामूहिक प्रवृत्ति का जीवन्त रूप उभरता है। सिद्ध साहित्य का प्रभाव नाथ–साहित्य सन्त सम्प्रदाय आदि की धार्मिक रचनाओं पर पड़ा इस दृष्टि से साहित्येतिहास की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कडी है। नाथ–सम्प्रदाय के उदयकाल एवं विकासशील सीमा के निर्धारण में हिन्दी के विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि नाथ मत का विकास किसी पूर्ववर्ती सम्प्रदाय से न होकर स्वतंत्ररूप से हुआ है। लेकिन यह बात किसी ठोस आधार पर आधारित नहीं है। क्योंकि संकटपूर्ण हो जाता है जब उसमें मौलिकता नहीं रहती है। नाथ मत के साथ कोई ऐसी बात घटित नहीं हुई है। उसने अपनी पूर्ववर्ती परम्परा को परिश्कृत–परिमार्जित कर एक नवीन मूल्य प्रदान किया ।

प्रस्तावना :-

नाथ–सम्प्रदाय का उदय :

नाथ–सम्प्रदाय के प्रवर्तक एवं कालनिर्धारण सम्बन्धी अवधारणा पर भी हिन्दी के आलोचकों में मतभेद हैं । सामान्यतः इस पंथ के संचालक मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ माने जाते हैं। इस सम्प्रदाय के संबंध में विद्वानों ने प्रमाण के लिए अनुमान पद्धिति का ज्यादा आश्रय लिया है। साहित्य की प्राचीन परम्परा के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि नाथ–सम्प्रदाय की मूलभूत प्रवृतियॉ शिव–शक्ति अर्थात शैव–सम्प्रदाय के सिद्धान्तों से संयुक्त थी। कुछ विद्वानों के मतानुसार गुरूगोरखनाथ इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। इनके संबंध में बौद्धों की यह किंवदन्ती है कि ये प्रारम्भ में बज्रयानी साधक थे जो बाद में शैव मत की साधना से प्रभावित होकर शैव हो गये । हर प्रसाद शास्त्री जी का यह भी कहना है कि नेपाल के बौद्ध लोग गोरखनाथ पर बहुत क्रुद्ध थे और उन्हें पहले बौद्ध धर्म का अनुयायी और बाद में उसका शत्रु मानते थे। उक्त किंवदन्तियों को यदि प्रमाणिक भी न माना जाय तो इसके मूल में कहीं न कहीं बौद्ध–साधना से नाथ–सम्प्रदाय के संबंध की ध्वनि ध्वनित होती है। डॉ0 पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ने नाथ शब्द पर विचार करते हुए इस सम्प्रदाय के उदय बिन्दु का संकेत किया है। बौद्ध परम्परा में ही बज्रयानी–सम्प्रदाय का उद्भव हो चुका था और बज्रयानी साधक केवल नाममात्र के लिए ही बौद्ध थे और उनमें नाथ शब्द गुरू के लिए प्रयुक्त होता था । क्योंकि गुरू बज्रकायाधारी, अजर और अमर माना जाता था।

उपर्युक्त विवेचन से तीन विचारधारायें स्पष्टतः झलकती हैं । गोरखनाथ और उनके सम्प्रदाय में संबंधित विविध विचारधारायें उभरी हैं । कुछ विद्वान इस सम्प्रदाय का उदय स्वतंत्रता रूप से उद्भूत मानते हैं जो सर्वदा भ्रमपूर्ण है। अन्य तथ्य यह है कि नाथ–सम्प्रदाय एवं गोरखनाथ को कुछ विद्वान बौद्ध बज्रयानी की शैवी–शाखा मानते हैं। तीसरी बात यह है कि डॉ0 पीताम्बरदत्त बडथ्वाल आदि विद्वान बौद्ध सिद्धों को ही प्रच्छन्नरूप में वामपन्थी सिद्धान्तों से परिमार्जित होने पर 'नाथपंथी' स्वीकार करते हैं । उक्त दोनों तथ्य अर्धस्तय की जमीन पर अवस्थित हैं। वस्तुतः एक ही भूभाग में शैव एवं बौद्ध तत्र साधनाऐं कई शताब्दियों तक समानान्तर गति से विकसित हुई। अतः समानुपातिक रूप से कुछ सिद्धान्तों का घुल–मिल जाना नितान्त स्वाभाविक है । जहॉ तक नाथ मत के प्रवर्तक का प्रश्न है इस संबंध में यह ज्ञातव्य है कि सीधे–सीधे किसी घटना के रूप में इस सम्प्रदाय का जन्म नहीं हुआ और न ही इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाने वाले गुरूगोरखनाथ स्वयंभू रूप में धरा पर अवतीर्ण हुए। इस विवाद को समन्वयात्मक पद्धति से सुलझाते हुए पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी निर्दिष्ट किया है – '' गोरखनाथ ने योगमार्ग को एक व्यवस्थित रूप दिया । उन्होंने शैव प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर बहु विस्तृत काया–योग के साधनों को व्यवस्थित किया । आत्मानुभूति और शैव परम्परा के सामन्जस्य के चक्रों की संख्या नियत की। उन दिनों अत्यन्त प्रचलित बज्रयानी साधना के पारिभाशिक शब्दों के साम्प्रतिक अर्थ को बलपूर्वक पारमार्थिक रूप दिया है और ब्राह्मण उदगम् से उद्भूत सम्पूर्ण ब्राह्मण विरोधी साधना–मार्ग को इस प्रकार संस्कृत

किया कि उसका रूढि–विरोधी ज्यों का त्यों बना रहा। किन्तु उसकी अशिक्षा अन्य प्रमादपूर्ण–रूढियॉ परिष्कृत हो गयी ।''

उपर्युक्त कथनों के आधार पर नाथ–सम्प्रदाय के प्रचारक एवं उसे प्रतिशिठत करने वाले व्यक्ति के रूप में गोरखनाथ को प्रवर्तक का दर्जा दिया जा सकता है। गोरखनाथ के जन्मकाल, स्थान, जाति आदि के संबंध में भी मतभेद हैं । किसी निश्चित तिथि का निर्देष विवादग्रस्त है।

नाथपंथियों की अनेक परम्पराऍ प्रचलित थी। जिस तरह सिद्ध साहित्य के निर्माता चौरासी सिद्ध माने जाते हैं उसी तरह नाथ–साहित्य के निर्माता नव नाथ माने गये हैं । इन नव–नाथों को चौरासी सिद्धों के अन्तर्गत भी गिना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार बौद्ध धर्म विकृत होकर वज्रयान सम्प्रदाय के रूप में देष के पूर्वी भागों में बहुत दिनों से चला आ रहा था। इन बौद्ध तांत्रिकों के बीच वामाचार अपनी चरम सीमा तक पहुॅचा। ये बिहार से लेकर आसाम तक फैले थे और सिद्ध कहलाते थे। चौरासी सिद्ध इन्हीं में हुए हैं जिनका परम्परागत स्मरण जनता को अबतक है। इन तांत्रिक योगियों को लोग अलौकिक शक्ति सम्पन्न समझते थे। ये अपनी सिद्धियों और विभूतियों के लिए प्रसिद्ध थें । राजेश्वर ने ' कर्पूरमांजरी– में भैरवानन्द के नाम से एक ऐसे सिद्ध योगी का समावेष किया गया है । इस प्रकार जनता पर इन सिद्ध योगियों का प्रभाव विक्रम की 10वीं शदी से ही पाया जाता है जो मुसलमानों के आने पर पठानों के समय तक कुछ–कुछ न बना रहा । बिहार के नालंदा और विक्रमशिला नामक प्रसिद्ध विद्यापीठ इनके अड्डे थे। बख्तियार खिलाजी ने इन दोनों स्थानों को जब उजाडा तब से ये सिद्ध तितर–वितर हो गये।

''नाथ–सम्प्रदाय एवं साहित्य'' में चौरासी सिद्धों के नाम निम्नवत हैं :

लूहिपा, लीलापा, विरूपा, डोभिपा, शवरीपा, सरहपा, कंकालीपा, मीनपा, गोरक्षापा, चौरंगीपा, वीणापा, शांतिपा, तंतिपा, चमरिपा, खड्गपा, नागार्जुन, कण्हपा, कर्णरिपा, थगनपा, नारोपा, शीलपा, तिलोपा, क्षत्र्पा, भद्रपा, दोखंधिपा, अजागिपा, कालपा, धोंभीपा, ककंणपा, कमरिपा, डेंगिपा, भदेपा, कुक्कुरिपा, कुचपा, धर्मपा, महीपा, अचिंतिपा, भल्लहपा, नलिनपा, भूसुकुपा, इंद्रभूति, मेकोपा, कुठालिपा, कमरिपा, जालंधरपा, राहुलपा, धर्वरिपा, धोकरिपा, मेदिनीपा, पंकजपा, घंटापा, जोगीपा, चेलुकपा, गुंडरिपा,निर्गुणपा, जयानंत, चर्पटीपा, चंपकपा, भिखनपा, भलिपा, कुमरिपा, चॅवरिपा, मणिभद्रपा, योगिनी, कनखलापा, योगिनी, कलकलपा, कंतालीपा, धहुरिया, दारिकपा, पुतलिपा, पनहपा, कोकालिपा, अनंगपा, लक्ष्मीकरा, योगिनी, समुदपा, भलिपा । (''पा'' आदरार्थक ''पाद'' शब्द है। इस सूची के नाम पूर्वापर कालानुक्रम से नहीं हैं। इनमें से कई एक समसामयिक थे।)

जिस प्रकार सिद्धों की संख्या चौरासी प्रसिद्ध है, उसी प्रकार नाथों की संख्या नौ है। अब भी लोग ' नवनाथ ' और ''चौरासी सिद्ध'' कहते सुने जाते हैं । '' गोरक्षसिद्धान्त संग्रह'' से मार्ग प्रवर्तकों के नाम गिनाये गये हैं।

नवनाथ '' गोरक्षसिद्धान्त संग्रह'' से निम्न हैं :

नागार्जुननाथ, जडभरतनाथ, हरिश चन्द्र नाथ, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, जलंधरनाथ, मलयार्जुननाथ। इन नामों में नागार्जुननाथ, चर्पटनाथ, और जलंधरनाथ सिद्धों की परम्परा में भी हैं । नागार्जुन (सं0 107) प्रसिद्ध रसायनी भी थे । नाथपंथ में रसायन की सिद्धि है। नाथपंथ सिद्धों की परम्परा से ही छॅटकर निकला है, इसमें सन्देह नहीं है।

नवनाथ बज्रयान शाखा के आचार्य माने जाते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में नाथों का सम्बन्ध बौद्ध सिद्धों से किसी न किसी रूप में रहा होगा। जो बाद में योग मार्ग को अपनाकर एक नवीन विचारधारा के रूप में प्रकट हुए। इस सम्प्रदाय के आदिनाथ ''शिव'' माने जाते हैं । जनश्रुति के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ के गुरू थे। मत्स्येन्द्रनाथ की भोगविलासमयी प्रवृतियों का गोरखनाथ ने घोर विरोध किया । यह विरोध दो भिन्न सिद्धान्तों को रेखांकित करता है। बौद्ध–सम्प्रदाय और नाथ–सम्प्रदाय के विभाजन की सूक्ष्म रेखा यहॉ सपष्टतः परिलक्षित होती है । इसके उपरान्त भी गोरखनाथ का समय विवादों से मुक्त नहीं होता है। राहुल सांकृत्यायन ने गोरखनाथ का समय 845 ईस्वी माना हैं । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उन्हें नौवीं शताब्दी का स्वीकारते हैं । जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गोरखनाथ का समय तेरहवीं शताब्दी माना है। डॉ0 पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ने इनका समय ग्यारहवीं शताब्दी माना है। डॉ0 मोहनसिंह ने नौवीं शताब्दी निर्दिष्ट किया है। इस मतभेद को देखते हुए गोरखनाथ का समय ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के आस–पास स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि बारहवीं का उत्तरार्ध बौद्ध–धर्म के पतन एवं शैव मत के उत्थान को सूचित करता है। अतः तेरहवीं शताब्दी के आरम्भिक काल को इनके साहित्य सृजन का काल भी माना जा सकता है। यह निर्विवाद स्वीकार किया जा सकता है कि गोरखनाथ चौदहवीं शताब्दी के पहले विद्यमान थे।

गोरखनाथ के जन्मस्थान के संबंध में भी कम मतभेद नहीं है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर नाथ–सम्प्रदाय की साहित्यिक पृश्ठभूमि को उजागर करने में इस प्रश्न का समाधान महत्वपूर्ण होगा। गोरखनाथ के जन्मस्थान एवं उनकी जीवन–परिस्थितियों के संबंध में कई तरह की दन्तकथाऍ प्रचलित हैं। कुछ विद्धानों का अनुंमान है कि इनका जन्म हिमालय क्षेत्र के आस–पास हुआ होगा। इसके पक्षधरों का तर्क है – वहॉ बौद्ध मत के साथ–साथ शिव पूजा भी प्रचलित रही है। क्योंकि पंजाब के उत्तरी हिमालय भाग में अभी तक कनफटे योगी मिलते हैं। जो शिव का पूजन करते हैं । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का भी अभिमत इस तथ्य को पुष्ट करता है । किन्तु वे समूचे नाथ–पंथ की प्रचार भूमि मूलतः राजस्थान एवं पंजाब को स्वीकारते हैं । उक्त मतों के समन्वय बिन्दु पर श्री रामबिहारी शुक्ल एवं डॉ0 भागीरथ मिश्र का अभिमत है – '' गोरखनाथ का मुख्य स्थान गोरखनाथ था किन्तु उनके मत का अधिक प्रचार पंजाब, राजस्थान आदि में हुआ। संभव है इसी से गोरखबानी कविता का पश्चिमी हिन्दी में पंजाबी और राजस्थानी का मेल हो गया है अथवा उन प्रदेशों में प्रचार के लिए कही गयी उनकी वाणी का स्वर ही ऐसा रहा हो। उपलब्ध रचनाओं की भाषा नवीं, दसवीं शताब्दियों की नहीं , प्रत्युत तेरहवीं, चौदहवीं की है।

उक्त मतों के ठीक विपरीत मिस्टर ब्रिग्ज ने गोरखनाथ का जन्म पूर्वी बंगाल माना है । इस मत का कोई ठोस आधार नहीं है, जबकि जनश्रुतियॉ प्रायः नेपाल एवं गोरखपुर का ही संकेत करती हैं। डॉ एस0 के0 चटर्जी, सर जार्जग्रियर्सन और टेसीटरी इनका जन्मस्थान पंजाब के किसी एक स्थान को मानते हैं । इसके विपरीत डॉ0 मोहनसिंह का स्वतंत्र मत है कि रावलपिण्डी के एक जिले में गॉव गोरखपुर का उल्लेख मिलता है तथा वहीं पसौर के आस–पास जन्म हुआ होगा।

गोरखनाथ का जन्म एवं जन्मस्थान के संबंध में विद्धानों में मतभेद होने का प्रमुख कारण यह है कि नाथ–सम्प्रदाय अनेक वर्षो तक सम्पूर्ण भारत में फैला हुआ था। नाथ–सम्प्रदाय के लोग भ्रमणशील जीवन बिताते थे। इससे यह माना जा सकता है कि इस मत के सर्वाधिक शक्तिशाली प्रचारक एवं प्रवर्तक गोरखनाथ थे। ये विभिन्न जगहों की यात्र अवश्य किये होंगे। दूसरी बात यह कि एकाधिक किवदन्तियों एवं उसकी भिन्नता का कारण गोरखनाथ के अलौकिक चमत्कारों की ऐतिहासिक गाथा है । ऐसे सन्त जो जनमानस के व्यापक–कल्याण के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दे उसकी जन्मभूमि का प्रश्न गौण हो जाता है। सामान्य जन ऐसे महात्माओं को अपने–अपने बताकर गौरवान्वित होना चाहता है। शायद गोरखनाथ के संबंध में किंवदन्तियों का कारण यही है।

नाथपंथ के जोगी कान की लौ में बडे–बडे छेद करके स्फटिक के भारी–भारी कुण्डल पहनते हैं, इससे इन्हें कनफटे नाथ के नाम से जाना जाता है। इनका पैतृक कार्य भिक्षाटन भी माना गया है । यह योगी महात्मा के रूप में भ्रमण कर अपनी गोरखवाणी से समाज को उपदेशित करते थे। इनके जीवन व्रत में इसका भी उल्लेख मिलता है कि यह योगी जूते,चप्पलों को पहनने के लिए प्रयोग नहीं करते थे। अपने नियमों के प्रति इनकी हठधर्मिता होती थी। इनके सम्प्रदाय में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे जलाया नहीं जाता था बल्कि उस व्यक्ति की अर्थी को सजाकर एवं मृत शरीर को पालकी में बिठा कर उसे उसीरूप में कब्र खोदकर कब्र में दफनाया जाता हैं । जिसे इनकी नाथसिद्ध योगी समाधि के रूप में जाना जाता है। नाथपंथ के उपदेषों का प्रभाव हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमानों पर भी प्रारम्भ में ही पडा। बहुत से मुसलमान, निम्नश्रेणी के ही सही, नाथपंथ में आए। अब भी बहुत से मुसलमान जोगी गेरूआ वस्त्र पहने, गुदडी की लम्बी झोली लटकाए, सारंगी बाजा बजाकर ' कलि में अमर राजा भर्तहरि ' के गीत गाते फिरते हैं और पूछने पर गोरखनाथ को अपना आदि गुरू बताते हैं । ये राजा गोपीचंद के भी गीत गाते हैं जो बंगाल में चटिगॉव के राजा थे और जिनकी माता मैनावती कहीं गोरखनाथ की शिष्या और कहीं जलंधर की शिष्या कही गई है।

''नाथ–साहित्य'' का उद्भव एवं विकास :

गेरखनाथ नाथ–साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं । वे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे किन्तु उन्होंने सिद्धों के मार्ग का विरोध किया था। गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वंय शिव थे। उनके पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ हुए, नाथ सम्प्रदाय एवं गोरखनाथ के साहित्य की मूलभूत विशेषतायें स्पष्टतः हठयोग साधना, आध्यात्मिक चिंतन, तांत्रिक चमत्कार एवं शिव–शक्ति की

उद्भावना है । इस सम्प्रदाय ने बौद्ध–तांत्रिक–वामाचार का घोर विरोध किया और सधन पक्ष पर बल देकर तांत्रिक सिद्धान्तों का बहिष्कार किया। दो परम्पराओं के बीच का सिद्ध–सम्प्रदाय एक नये संगठन के रूप में उभरा होगा। इस परिप्रेक्ष्य में हजारी प्रसाद द्विवेदी का निम्नलिखित अभिमत उचित प्रतीत होता है।

'' गोरखनाथ की साधना मूल का स्वर शील, संयम और शुद्धतावादी है और उन्होंने तांत्रिक उच्छृखलताओं का विरोध कर निर्मम हथौडे से साधु एवं गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को चूर्ण कर दिया। इतना ही नहीं बल्कि गोरखनाथ ने अपने पूर्ववर्ती समस्त सम्प्रदायों, धार्मिक मतों शाक्तों और शैवों मूं प्रचलित वाममार्ग एवं तांत्रिक मिथ्याचार का भी खण्डन किया हैं । डॉ0 सिंह यौगिक विषेशताओं के आधार पर गोरखनाथ को अवधूत या ज्ञानी योगी भी मानते हैं। गोरखनाथ के अदभुत प्रतिभा एवं चतुर्दिक प्रभाव को देखकर विद्धानों ने ऐसा अनुमान लगाया है कि वाममार्गी शाक्त, बौद्ध, अघोर, जैन–तांत्रिक आदि सम्प्रदाय नाथ–सम्प्रदाय में लीन हो गये होंगे । कण्हपा की पद्धति से यह ज्ञात होता है कि बहुमात्र में बौद्ध अनुयायी बौद्ध धर्म का त्याग कर शैव एवं नाथ–सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये। गोरखनाथ के अनेक शिष्यों की गणना विद्धानों में की है। जिनमें से बालानाथ, हाडिया या जालंधरनाथ, पालिपा, मैनावती और गहिनीनाथ थे। शिष्य परम्परा में जालंधरनाथ के सर्वाधिक प्रसिद्ध शिष्य भर्तृहरि हुए और गहिनीनाथ के शिष्य ज्ञानेष्वा हुए, जिनका समय तेरहवीं शताब्दी के आस–पास माना जाता है । गोरखनाथ की लगभग 25 रचनाएँ उपलब्ध हैं जो संस्कृत एवं विभिन्न भाषाओं में लिखी गई हैं । डॉ0 पीताम्बरदत्त बडथ्वाल द्वारा संपादित एवं संग्रहित गोरखबानी ग्रन्थ में गोरखनाथ रचित अन्य चौदह ग्रन्थों में असंदिग्ध माना गया है। हिन्दी में रचित गोरखनाथ की निम्नांकित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–

शिष्या दर्शन, प्राण संकली, नरवैबोध, आत्मबोध, अभैमात्र जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तषर, महीन्द्र गोरव बोध, रोमावली, ग्यान तिलक, पंचमात्र, गोरख गणेश गुश्टि, गोरशदन्त, गुश्टि ज्ञानपीठ बोध, महादेव गोरख गुश्टि, सृष्टि पुराण, दयाबोध आदि।

संस्कृत में रचित ' गोरक्षषतक' सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है। डॉ0 मोहन सिंह संवत् 1701 की पोथी के आधार पर इसका संपादन किया है। जिसकी भाषा पंजाबी, राजस्थानी तथा पूर्वी प्राचीन खडी बोली प्रतीत होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल यह भी मानते हैं कि उक्त समस्त ग्रन्थ गोरखनाथ के नहीं बल्कि उनके अनुयायी शिष्यों के द्वारा भी रचित हैं। हिन्दी भाषा में रचित ग्रन्थ अधिकतर इन्हीं के अनुवाद या सार हैं। साखी और बानी में शायद कुछ रचनायें गोरखनाथ की हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह मत सही प्रतीत हो सकता है क्योंकि नाथ सम्प्रदाय में गुरू परम्परा का बहुत महत्व था। अपने गुरू के आदेषों को शिष्यों ने लिपिबद्ध किया हो, किन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता है कि उक्त रचनायें गोरखनाथ की नहीं है। समय के अन्तराल एवं परिस्थितियों के परिवर्तन से रचनाओं के मूल रूप में परिवर्तन आ जाना स्वाभाविक है। उनकी भाषा को रामचन्द्रशुक्ल ने चौदहवी शताब्दी का निरूपित किया है। नाथ–साहित्य की भाषा में विभिन्नता सन्निहित हैं। इसका मुख्य कारण उनके द्वारा घूम–घूम कर अपनी सिद्धान्त का प्रचार प्रसार करना था । जिसके फलस्वरूप देश में प्रचलित अन्य भाषाओं का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पडा है। युगीन दृष्टि से अपभ्रंष भाषा की अंतिम स्थिति

अथवा देश भाषा के प्रचलन की पृश्ठभूमि रही है। इस साहित्य में प्राचीनता की झलक सुस्पष्ट है। अपनी भूमिका में नाथ साहित्य की दुर्बलता एवं उपलब्धि का सार्थक विवेचन करते हुए उन्होंने लिखा है –

'' इस साहित्य की सबसे बडी कमजोरी उसका रूखापन और गृहस्थ के प्रति अनादर का भाव है। इसी ने इस साहित्य को नीरस, लोक–विद्रूप और क्षयिश्णु बना दिया था । फिर भी यह दृढ कण्ठ–स्वर उत्तरी भारत के धार्मिक वातावरण को शुद्ध और उदान्त बनाने में सहायक हुआ । इस दृढ कण्ठ ने यहॉ की धार्मिक साधना में गलदश्रु–भावुकता और ढुलमुलेपन को नहीं आने दिया। परवर्ती हिन्दी साहित्य में चरित्र–गत दृढता, आचरण शक्ति और मानसिक पवित्रता का जो स्वर सुनाई पढता है उनका श्रेय इस साहित्य को भी है। इसलिए इस पंथ के साहित्य से परिवर्ती हिन्दी साहित्य का बहुत घनिष्ठ संबंध है। ''

आदिकालीन हिन्दी साहित्य की उपलब्ध साहित्यिक सामग्रियों के प्रमाणिकता निर्विवाद नहीं है। विभिन्न विद्धानों द्वारा सम्पादित गोरखबानी ग्रंथ में इसकी प्राचीन भाषा का रूप भिन्न–भिन्न मिलता है। गोरखनाथ का साधना क्षेत्र गोरखपुर को मानने वाले विद्धान इस ग्रंथ में पूर्वी लोक भाषा भोजपुरी, मगधी, बंगला, नेपाली, उडिया आदि भाषाओं के मूलरूप की प्रतीति देते हैं। डॉ0 सुकुमारसेन गोरखनाथ की रचना गोरखग्रंथावली की प्रारम्भिक पदावलियों में बंगलाभाषा का प्रभाव मानते हैं। समय समयान्तर पर नाथ–सम्प्रदाय के प्रभाव में तदयुगीन प्रचलित कई सम्प्रदाय अन्तर्भूत हुए हैं। उत्तरी और पूर्वी भारत में विस्तृत होने के कारण कई सम्प्रदायों की भिन्न–भिन्न प्रवृतियॉ इस सम्प्रदाय में परिलक्षित होती हैं। दक्षिण भारत में नागपूजा महाराष्ट्र में भैरवपूजा मलायली में काली की पूजा पर विश्वास करने वाले योगियों की साधना भी इस सम्प्रदाय की विविधता को उजागर करती है। जिनमें से कुछ योगी गृहस्थ जीवन बिताते थे। तथा कुछ वामपंथी थे । इससे भाषा की एकरूपता भी बाधित होती है। डॉ0 बडथ्वाल ने गोरखबानी की भाषा की विभिन्नता को इन योगियों के घुम्मकडी जीवन का प्रभाव निरूपित किया है। वे कान्हा और गोरख के वाणियों में पूर्वी, भोजपुरी भाषा हिन्दी साहित्य व आदिकाल और बीसलदेव रासो का स्पष्ट प्रभाव कराते हैं और कुछ स्थलों पर मराठी और गुजराती का भी आभाश देते हैं । हिन्दी के अधिकांश विद्वान उपर्युक्त मत से सहमत हैं। उक्त नाथ रचनाओं एवं रचनाकारों के अतिरिक्त भी मत्स्येन्द्रनाथ, टरपटनाथ, नागार्जुन, जालंधरनाथ, पृथ्वीनाथ आदि की रचनाएॅ भी उपलब्ध हैं । नाथ–साहित्य का वर्ण्य विषय मूलतः दो धाराओं में प्रवाहित हुआ ये दो धारायें हैं –

दर्शन एवं व्यवहार भावना की पृष्ठभूमि पर ईश्वर की चिन्तना को नाथपंथियों ने शून्यवाद के रूप में ग्रहण किया है। हस शून्य अलखनिरंजन है। नाथों के अनुसार वैराग्य से ही मनुष्य को मुक्ति मिलती है। इस वैराग्य के लिए गुरू को इन्होंने सर्वोच्च स्थान दिया है। नाथों का एक विषेश उद्देष्य प्रचार प्रचारतंत्र न होकर आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग अन्वेशण करना था। अतः आध्यात्मिक क्षेत्र में रहस्यात्मक शैली को अपनाकर अलटबासी का विचित्र प्रयोग इन्होंने किया है । ये साधना में नारी को सबसे अधिक बाधक मानकर उसका निशेध करते हैं । इन बिन्दुओं को लक्षित करते हुए डॉ0 शिवकुमार शर्मा ने लिखा है –सम्भव है कि गोरखनाथ ने बौद्ध विहारों में भिक्षुणियों के प्रवेश का

परिणाम और उनका चारित्रिक पतन देखा हो तथा वज्रयान के मार्ग में भैरवी और योगिनी रूप नारियों की ऐंद्रिक उपसाना में धर्म की विकृत होते देखा हो । गोरखनाथ ने अपने शिष्यों को नारी से सदा दूर रहने का आदेश दिया । कबीर में नारी विरोध का जो स्वर मिलता है उसे भी इसी प्रतिक्रिया का परिणाम समझना चाहिए। नाथपंथियों का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त व्यवहारिकरूप से हठयोग की साधना है। जिस तरह वज्रयानियों ने शून्य को ही विश्व का मूल तत्व माना उसी तरह नाथपंथियों ने अलखनिरंजन को मूल तत्व माना । पारिभाषिक दृष्टि से दोनों तथ्य समानान्तर हैं ।

किन्तु क्रियात्मक दृष्टि से नाम– सम्प्रदाय उसे एक विशिष्ट अर्थ–गौरव प्रदान करता है। यद्यपि योग का उद्‌गम संस्कृत वाडमय के पतन्जलि से भी प्राचीन परम्परा है, जिसे व्यास ने गीता में भी निष्काम कर्म के रूप में भक्ति–मिश्रित भाव से व्याख्ययित किया है। तथापि कुछ मौलिक सिद्वांतों से नाथ सम्प्रदाय ने उसे कम बल नही दिया है। देश की शुद्धि की प्रकिया नाथ साधकों के अनुसार कुंडलित को जागृत कर चेतना को उर्ध्वमुखी करती है। गोरखनाथ ने आसन, प्राण–संवरोध, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि को योग के छह आवश्यक अंग माने हैं। साधक इस कष्ट साध्य प्रक्रिया से ही सिद्वि प्राप्त करता है। गोरवनाथ ने ब्रह्य की कल्पना इन्द्रीय निग्रह एवं साधना की ठोस भूमि पर की है। वे अद्वैत को केवल ज्ञान का विषय नही मानते थे। ब्रह्य अगम है, अगोचर है, उसकी कोई बस्ती नही है, वह शून्य भी नही है। हम नही कह सकते है कि वह कुछ है और यह भी नही कह सकते है कि ये कुछ भी नही है। गोरखनाथ के अनुसार वह भाव–अभाव, सत्य–असत्य दोनों से परे है। यह स्थिति वह आकाश मण्डल में बोलने वाला बालक है। (शून्य आकाश अथवा ब्रह्यरन्ध्र में ब्रह्य का निवास माना जाता है) परमात्मा पाप पुण्यों से अछूता है, जरा–भरण से दूर है। अक्षय परम–ब्रह्य है। अर्थात सहस्त्रार या ब्रह्यरन्ध्र में ही वह अलोप है। उसी के कारण यनि सिद्ध–योग से ही साधक योग–मार्ग में प्रवेश कर योगेश्वर बन जाता है।

सिद्वों की वाममार्गी भोग प्रधान योग–साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में नाथपंथियों की हठयोग–साधना आरम्भ हुई। राहुल जी ने नाथ–पन्थ को सिद्वों की परम्परा का ही विकसित रूप माना है। इस पंथ को चलाने वाले मत्स्येन्द्र नाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ माने जाते हैं। डॉ रामकुमार वर्मा का मत है कि नाथ पंथ से ही भक्तिकाल के सन्त मत का विकास हुआ था। जिसके प्रथम कवि कबीर थ। इस मतव्य का समर्थन कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से हो जाते है। नाथ पंथी रचनाओं की अनेक विशेषताएँ संत काव्य में यथावत विद्यमान है।

डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ''नाथ–पंथ या नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध–मत, सिर्द्ध–मार्ग, योग–मार्ग योग सम्प्रदाय, अवधूत–मत एवं अवधूत सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है।''

उनके इस कथन का यह अर्थ नही है कि सिद्धमत और नाथ–मत एक ही है। उन्होंने तो नाम ख्याति की ओर ध्यान आकर्षित किया है। जिसका आशय इतना ही है कि इन दोनों मार्गो को एक ही नाम से पुकारा जाता था। और उसका कारण यह था कि मत्स्येन्द्र नाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) सिद्धों में भी गिने जाते थे। यह प्रसिद्ध है कि मत्स्येन्द्रनाथ नारी–सहचर्य के आचार में जा फंसे थे, जिससे उनके शिष्य गोरखनाथ ने उद्धार किया था। वस्तुतः इस लोक–चर्चा के मूल में ही सिद्ध–मत एवं नाथ–मत का अन्तर छिपा हुआ है। सिद्ध–गण, नारी–भोग में विश्वास

करते थे। किन्तु नाथ–पन्थी उसके विरोधी थे। इसी लिए मत्स्येन्द्र नाथ के आचरण का विरोध उनके शिष्य गोरखनाथ ने किया था। यही कारण है कि गोरखनाथ नाथ–साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। वे सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य होने के बाद भी सिद्धों के मार्ग का विरोध करने वाले माने जाते है। नाथ साहित्य के अनुसार ही आदिनाथ स्वयं शिव थे। उन्ही के पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ का जन्म माना जाता है।

गोरखनाथ से पहले अनेक सम्प्रदाय थे, जिन सब का उनके नाथ पंथ में विलय हो गया था। शैवों एवं शाक्तों के अतिरिक्त बौद्ध, जैन तथा वैष्णव योगमार्ग भी उनके सम्प्रदाय में आ मिले थे। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरू–महिमा, इन्द्रिय–निग्रह, प्राण–साधना, वैराग्य मनः साधना, कुण्डलिनी–जागरण, शून्य–समाधि आदि का वर्णन किया है। इन विषयों में नीति और साधना की व्यापकता मिलती है डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार जीवन की अनुभूतियों का सघन चित्रण होने के कारण इन रचनाओं को साहित्य में सम्मिलित करना ही उचित है। इसी साहित्य का विकास भक्तिकाल में ज्ञानमार्गी सन्त–काव्य के रूप में हुआ। अतः नाथ साहित्य की साहित्यिकता को स्वीकार करना ही अधिक न्याय संगत है।

गोरखनाथ ने हठ योग का उपदेश दिया था। हठयोगियों के सिद्ध–सिद्धान्त–पद्धति ग्रन्थ के अनुसार 'ह' का अर्थ है सूर्य तथा 'ठ' का अर्थ है चन्द्र। इन दोनों के योग का हठयोग कहते हैं।

गोरखनाथ ने ही षट्चक्रोंवाला योग–मार्ग हिन्दी साहित्य में चलाया था इस मार्ग में विश्वास करने वाला हठयोगी साधना द्वारा शरीर और मन को शुद्ध करके शून्य में समाधि लगाता था, और वही ब्रहम का साक्षात्कार करता था। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वह है, जिसका चित्त विकार–साधन होने पर भी विकृत नही होता।

नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।
मूर्त जगत में अमूर्त के स्पर्श को व्यक्त करते हुए गोरखनाथ कहते हैं।
अंजन मांहि निरंजन भेट्या, तिल मुख भेट्या तेलं।
मूरति मॉहि अमूरति परस्या, भया निरंतरि खेलं।।

गोरखनाथ की रचनाओं से स्पष्ट है कि भक्तिकालीन संत मार्ग के भावपक्ष पर ही उनका प्रभाव नही पड़ा, भाषा और छनद भी प्रभावित हुए है। इस प्रकार उनकी रचनाओं में हमें आदि काल की वह शक्ति छिपी मिलती है, जिसने भक्तिकाल की कई प्रवृतियों को जनम दिया।

अन्य कवि :– नाथ साहित्य के विकास में जिन कवियों ने योग दिया उनमें चौरंगीनाथ, गोपीचन्द, चुणकरनाथ, भरथरीनाथ, जलन्धीपाल नाथ आदि प्रसिद्ध है। इन कवियों की रचनाओं में उपदेशात्मक तथा खण्डन–मण्डन का प्राधान्य है। तेरवही सदी में इन सबने अपनी वाणी का प्रचार किया था।

ये सभी हठयोगी प्रायः गोरखनाथ के भावों का अनुकरण करते थे। अतः इनकी रचनाओं में कोई उल्लेखनीय विशेषता नही मिलती है। गोरखनाथ की हठयोग–साधना में ईश्वरवाद व्याप्त था इन हठयोगियों ने भी उसका प्रचार किया, जो रहस्यवाद के रूप में प्रतिफलित हुआ और जिसका भक्तिकाल में कबीर आदि ने अनुकरण किया।

सिद्ध–साहित्य

सिद्धों ने बौद्ध–धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जन–भाषा में लिखा, वह हिन्दी के सिद्ध–साहित्य की सीमा में आता है। राहुल सांकृत्यान ने चौरासी सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है। जिनमें सिद्ध सरहपा से यह साहित्य आरम्भ होता है। इन सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोक्भिपा, कण्हपा एवं कुक्कुरिया हिन्दी के मुख्य सिद्ध कवि है। यहॉ संक्षेप में इनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देकर मैं इनकी भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा।

सरहपा :– ये सरहपाद, सरोजपत्र, राहुलभद्र आदि कई गमों से प्रख्यात है। जाति से ये ब्राहमण थे। इनके रचना काल के विषय में सभी विद्वान एकमत नही है। राहुल जी ने इनका समय 769 ई0 माना है। जिससे अधिकांश विद्वान सहमत है। इनके द्वारा रचितग्रन्थ बत्तीस बताये जाते है। जिनमें से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं में प्रसिद्ध है। इन्होने पाखण्ड़ और आडम्बर का विरोध किया है तथा महासुख की ओर ले जाते है। इनकी भाषा सरल तथा गेय है एवं काव्य में भावों का सहज प्रवाह मिलता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है –

नाद न बिन्दु न रवि न शशि मण्डल,
चिअराअ सहाबे मूकल।
अजुरे उजु छाड़ि मा लेहु रे बंक,
निअहि बोहिमा जाहु रे लांक।
हाथेरे कांकाण मा लोउ दापण,
अपणे अपा बुझतु निअन्मण।

सरहपा की इस कविता से स्पष्ट है कि उनकी भाषा तो हिन्दी ही है। केवल उस पर यत्र–तत्र अपभ्रंश का प्रभाव है। भाव और शिल्प की जो परम्परा सन्त–साहित्य में जाकर नये रूप में उभरी, उसका बीज रूप सरहपा के काव्य में द्रष्तव्य है।

शबरपा :– इनका जन्म क्षत्रिय–कुल में 780 ई में हुआ था। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था शबरों का सा–जीवन व्यतीत करने के कारण ये शबरपा कह जाने लगे। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है ये माया–मोह का विरोध करके सहज जीवन पर बल देते थे और उसी को महासुख की प्राप्ति का मार्ग बतलाते थे।

इनकी कविता की कुछ पंक्तियॉ निम्नलिखित है –

हेरि ये मेरि बाड़ी खसमें समतुला
पुकड़ए सेरे कपासु फुटिला।
तइला वाडिर पासेर जोहणा वाड़ी ताएला,
फिटेलि अंधारि रे आकाश पुलिआ।।

लुइपा :– ये राजा धर्मपाल के शासन–काल में कायस्थ–परिवार में उत्पन्न हुए थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य बनाया था। इनकी साधना का प्रभाव देखकर उड़ीसा के तत्कालीन राजा तथा मंत्री इनके शिष्य हो गये थे। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊॅचा स्थान माना जाता है। इनकी कविता में रहस्य–भावना की प्रधानता है। जो निम्न प्रकार है –

काआ तरूवर पंच विडाल, चंचल चीए पइठो काल।
दिट करिअ महासुह परिणाम, लुइ भरमह गुरू पूच्छि अजाण।।

डोम्भिपा :– मगध के क्षत्रिय वंश में 840 ई के लगभग इनका जन्म हुआ था। विरूपा से इन्होंने दीक्षा ली थी। इनके द्वारा रचित इक्कीस ग्रन्थ बताये जाते है। जिनमें 'डोम्बि–गीतिका' योगचर्या, इनकी कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है –

गंगा लउना माझेरे बहर नाइ।
तंहि बुड़िली मातंगि पोड़आली ले पार करई।।
बहतु डोम्बी बाह ले, डोम्बि वाटत मइल उछारा।
सद्गुरू पाऊ पए जाइब पुणु जिणउरा।।

कण्हपा :– इनका जन्म कर्नाटक के ब्राहमण–वंश में 820 ई0 में हुआ था। बिहार के सोमपुरी स्थान पर ये रहते थे। जालान्धरपा को इन्होंने अपना गुरू बनाया था। कई सिद्धों ने इनकी शिष्यता स्वीकार की थी। इनके लिखे चहोत्तर ग्रन्थ बताते है। जिनमें अधिकांश दार्शनिक विषयों पर है। रहस्यात्मक भावनाओं से परिपूर्ण गीतों की रचना करके ये हिन्दी के कवियों में प्रसिद्ध हुए। इन्होंने शास्त्रीय रूढ़ियों का भी खण्डन किया है।

इनकी कविता का एक उदाहरण निम्नलिखित है।
आगम वेअ पुराणे, पंडित मान बहंति।
पक्क सिरिफल अलिअ, जिम वाहेरित भ्रमयंति।।

कुक्कुरिया :— इनका जन्म कपिलवस्तु के एक ब्रहमण वंश में माना जाता है। इनके जन्म काल का पता नही चल सका है। चर्पटिया इनके गुरू थे। इनके द्वारा रचित सोलह ग्रन्थ माने जाते है। ये सहज जीवन के समर्थक थे।

इनकी कविता का उदाहरण इस प्रकार है —
हांउ निवासी खमण भतारे, मोहोर विगोआ कहण न जाइ।
फेटलिउ गो माए अन्त उड़ि चाहि, जा एथु बाहाम सो एथु नाहिं।।

इन प्रमुख सिद्ध कवियों के अतिरिक्त अन्य सिद्ध कवि भी जन—भाषा में अपनी वाणी का प्रचार पद्य में करते थे। किन्तु उसमें कवित्व का उतना अंश नही, जिसके आधार पर उसे साहित्य के विकास में योगदान माना जा सके। जिन कवियों की पहले चर्चा की गई है, उनका साहित्य ही हिन्दी के सिद्ध—साहित्य के लिए गौरव का विषय है इन कवियों ने हिन्दी साहित्य में कविता की जो प्रवृत्यिॉ आरम्भ की उनका प्रभाव भक्तिकाल तक चलता रहा। रूढ़ियों के विरोध का अक्खड़पन, जो कबीर आदि की कविता में मिलता है। इन सिद्ध कवियों की देन है। योग साधना के क्षेत्र में भी इनका प्रभाव पहुॅचा। सामाजिक जीवन के जो चित्र इन्होंने उभारे, वे भक्तिकालीन काव्य के लिए सामाजिक चेतना की पीठिका बन गये। कृष्ण—भक्ति के मूल में जो प्रवृत्ति—मार्ग है। उसकी प्रेरणा के सूत्र भी हमें इनके नाथ सिद्ध साहित्य में मिलते हैं।

वर्तमान नाथ सम्प्रदाय एवं निवास का विवरण

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है। इस समाज में स्त्रियों की स्थिति हमेशा दासों जैसी रही है। समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होने के वाबजूद भी स्त्री को कभी भी समाज के मुख्य अंग के रूप में स्वीकार नही किया गया है। प्रकृति ने जीवन व्यवस्था में दो तत्वों को महत्वपूर्ण रूप दिया—एक स्त्री और दूसरा पुरूष। समाज के विकास में दोनों ही पक्षों ने अपना—अपना भरपूर सहयोग दिया। कोई भी पक्ष, दूसरे पक्ष की तुलना में न तो अधिक ऊॅचा और न अधिक नीचा, लेकिन फिर भी सामाजिक मान्यताओं ने स्त्री को तो पुरूष के बराबर का हक नही दिया। समाज ने एक ओर तो पुरूष को सर्वोच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित कर, भारतीय समाज को पुरूष प्रधान समाज ही बना दिया और स्त्री को निचले तबके का प्राणी घोषित कर दिया। सामाजिक मान्यताओं, रूढ़ियों परम्पराओं और कुरीतियों के कारण ही आज भी स्त्री उसी स्थान पर प्रतिष्ठित है जिस स्थान पर वर्षो पहले थी। चाह कर भी वह सामाजिक परम्पराओं के घेरे को नही तोड़ पाई है। इन्ही प्राचीन रूढ़ि परम्पराओं के कारण ही अपनी साधना एवं योग में नारी को गोरखनाथ के द्वारा बाधक माना गया था। गोरखनाथ के गुरू मछन्दरनाथ पूर्णतः नारी भोग में संलिप्त थे। जिसका गोरखनाथ के द्वारा विरोध किया गया था इसी लिए नाथ—साहित्य में नाथ पंथी—योगियों को नारी से पूर्णतः दूर रहने का नियम व्रत था। नाथ—पंथी सिद्ध गण नारी भोग पर विश्वास नही करते थे। वर्तमान नाथ सम्प्रदाय

गुरूगोरखनाथ के वंश एवं सम्प्रदाय से फलीभूत एक नवीन सम्प्रदाय है जिसमें पौराणिक समय से लेकर वर्तमान तक काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। यह परिवर्तन नाथ सम्प्रदाय से आधुनिकता की चका चौंध के द्वारा हुआ है आज समाज का हर व्यक्ति भौतिक वादी नवीन धारा में बह चुका है। वर्तमान में भी नाथ सम्प्रदाय के कुछ लोक अपनी पौराणिक समय से चली आ रही रीति का बखूबी से पालन कर रहे है लेकिन उन लोगों के सामने भी वर्तमान सामाजिक परिवेश बाधा बना हुआ है। आज भी नाथ सम्प्रदाय के लोग कुछ एक स्थानों पर प्राचीन नाथ सम्प्रदाय के नियमों का पालन करते है किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे समाधि के रूप में दफनाकर समाधि स्थापित की जाती है। अपनी तांत्रिक योग सिद्धि की विद्या में प्राचीन समय से ही दक्ष नाथ सम्प्रदाय आज भी पोथी का वाचन कर लोगों के जीवन में आये कष्ट, बाधाओं का दूर कर रहे है। साथ ही सभी देवी देवताओं को अवतरित करने की सिद्धि द्वारा आज भी समाज में अपने पौराणिक कार्य का निर्वहन कर रहा है। विभिन्न प्रेत आत्माओं के दोष से मानव को नाथ सम्प्रदाय के योगी सिद्धि प्राप्त अपनी विद्या से मुक्त कर देते है जो शक्ति का एक बड़ा चमत्कार होता है। 18वी सदी में ग्राम स्वाड़ी, ढुंग एवं गढ़ हिटरी गढ़वाल में नाथ सम्प्रदाय के लोगों के बीच में स्वयं गुरू गोरखनाथ योग सिद्धि शक्ति के द्वारा कोई भी विशेष व्यक्ति अपने कान छिदवाता था तथा उन पर कुण्डल धारण करता था जिन्हें नाथ–साहित्य में कनफटे योगी (जोगी) के नाम से जाना जाता है। उस व्यक्ति के जीवन जीने के समाज में कुछ अलग नियम होते थे। जैसे – वह भगवे रंग के कपड़े पहनता था उसे नाथ सम्प्रदाय के नियमानुसार भिक्षाटन करना पड़ता था। भिक्षाटन करते समय हाथ में कमण्डल लेना पड़ता था। भिक्षा ग्रहण झौली एवं कमण्डल में किया जाता था वह व्यक्ति पैरों में जूते का प्रयोग नही करता था तथा गृहस्थ जीवन जीता था। लेकिन खेतों में हल लगाना उसके लिए वर्जित था। वह हमेशा जीवन में सात्विक भोजन करता था मास, मदीरा एवं तामसी भोजन उस व्यक्ति के लिए अछूत था। सात्विक भोजन के साथ–साथ सात्विक जीवन भी उस व्यक्ति के द्वारा जीने की बाध्यता होती थी। सात्विक जीवन का आशय बिना राग, द्वेष एवं खोट, कपटी के व्यवहार से है। वह व्यक्ति ज्ञान, विद्या, सिद्धि योग के क्षेत्र में साधक होता था। वह विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों का वाचन कर समाज को ज्ञान प्रदान करता था। ग्राम स्वाड़ी में नाथ सम्प्रदाय के लोगों के बीच यह अवलोकन कर देखा गया कि 18वीं सदी में इस गॉव के नाथ सम्प्रदाय में जो कनफटे योगी बने थे। जिन्हे बालमा नाथ के नाम से जाना जाता है, के गृह निवास पर वर्तमान में भी अवशेष के रूप में उनका भिक्षाटन का कमण्डल, झौली, चिमटा, प्रेम सागर, सुखसागर, महाभारत, रामायण, गीता, तथा विभिन्न सिद्धियों की लिपिबद्ध पुस्तकें पाई गयी। बालमा नाथ का जन्म उनके पिता मंगशीरू के घर में लगभग 1877 को हुआ था। इनके पिता मंगशीरू जो कि मूल रूप से जोगियाण गॉव (अठूरवाला) टिहरी के रहने वाले थे। इनका जन्म 1855 ई0 को लगभग ग्राम जोगियाणा टिहरी में हुआ था जोगियाणा गॉव जो टिहरी शहर से एक किमी0 आगे पेट्रोल पम्प के पास भागीरथी नदी के समीप बसा था। जिसे मूल रूप से टिहरी शहर में ही स्थित माना जाता था। इस गॉव में मुख्य रूप से सजवाण नाथ जाति के लोग निवास करते थे। गहन शोध करने पर ज्ञात हुआ कि जोगियाणा गॉव के सजवाणों का कुल देवता भैरव नाथ था। जिसका मंदिर गॉव में ही स्थित था यह बहुत शक्तिशाली एवं प्रसिद्ध सिद्ध देवता था जिसकी शक्ति के प्रमाणों से सभी लोग एवं

टिहरी नरेश (राजा) भी भिज्ञा था। कहा गया है कि जोगियाणा गॉव का कोई सजवाण जाति का व्यक्ति का किसी साध्वी (जोगणी) से आंतरिक प्रेम संबंध हो गए थे। यह साध्वी (जोगणी) टिहरी शहर में भागीरथी नदी के समीप स्थित बद्रीनाथ मंदिर समूह में पाठ–पूजा का कार्य करती थी। इसी साध्वी के साथ उस व्यक्ति ने विवाह कर लिया और अपने घर जोगियाणा ले गया। तभी से उस गॉव का नाम जोगियाणा उस जोगणी के आने पर रखा गया। सजवाण जाति के कुल में जोगणी (साध्वी) आने से गॉव का नाम परिवर्तित कर दिया गया। पहले इस गॉव का नाम सजवाणा हुआ करता था। संबंधित व्यक्ति के साथ जोगणी (साध्वी) का विवाह होने के उपरान्त उसके दो बेटे हुए। एक बेटा साध्वी (जोगणी) का मानसिक रूप से स्वस्थ था लेकिन दूसरा बेटा मानसिक रूप से स्वस्थ नही था वह मूक बधिर था। बड़े होने पर छोटा बेटा जो मानसिक रूप से मूक बधिर था ने अपने जोगियाणा गॉव की नाथ परिवार की लड़की से प्रेम संबंध स्थापित कर दिए जिससे सजवाण जाकि के लोगों से वह हमेशा के लिए अलग हो गया। अब वह व्यक्ति स्थाई रूप से नाथ परिवार में रहने लग गया। इसी मूकबधिर व्यक्ति की सन्तान के रूप में मंगशीरू ने जन्म लिया जिसके पूर्वज वंशज सजवाण थे। जिनका घर, परिवार, ऑगन, आवास संयुक्त रूप से साथ–साथ मिले थे। मंगशीरू जब 20 वर्ष का हुआ तो वह विवाह हेतु घर जवांई के रूप में 1875 को स्वाडी गॉव एक महिला के बुलावे के कारण आया था। क्योंकि उस महिला के लड़के नही थे। लड़कियॉ ही लड़कियॉ होने के कारण उस महिला ने मंगशीरू को अपने घर में अपनी बेटी के साथ विवाह कर घर जवांई के रूप में रख दिया तत्प्श्चात समय बीतता गया और मंगशीरू ने अपना जोगियाणा का घर एवं अपने पिता की पैतृक सम्पत्ति को छोड़ दिया। और जोगियाणा टिहरी जाना ही बन्द कर दिया। तथा स्थाई रूप से उसी महिला के घर स्वाड़ी रहने लग गया उसके बाद मंगशीरू के दो पुत्र हुए। बड़े का नाम बालमा तथा छोटे का नाम दानसी था। बालमा तथा दानसी के जन्म का समय 1877 से 1880 के बीच लगभग माना गया है।

उधर जोगियाणा गॉव में पैराणिक समय से सभी सजवाण एवं नाथ परिवार भैरव की पूजा किया करते थे। भैरव एक बार सजवाणों के कुल पर दोष करता था। उस दोष के निवारण के रूप में कुल में किसी व्यक्ति का चयन स्वयं भैरव देवता करते थे। वह कनफटा योगी (जोगी) कहा जाता था। उस व्यक्ति को फिर योगी के नियम व्रतों का पालन करना पड़ता था। फिर भैरव एक बार नाथ सम्प्रदाय पर दोष करता था इसी तरह स्वयं भैरव के द्वारा किसी व्यक्ति पर अवतरित होकर कान फाड़ने वाले व्यक्ति का चयन होता था। इसी तरह नाथों के बीच में भी कनफटा योगी (जोगी) बनता था। इस प्रकार की क्रिया जोगियाणा के सजवाणों एवं नाथों के बीच चलती रहती थी। दोनों सम्प्रदायों (जातियों) का कुल देवता भैरव था।

इधर जब मंगशीरू स्वाड़ी आया तो उसकी सन्तान होने के उपरान्त भैरव नाथ ने मंगशीरू पर दोष कर दिया फिर मंगशीरू के द्वारा स्वाड़ी में भैरव मंदिर की स्थापना कर दी गई। पाठ–पूजन के साथ भैरव के निशानों को मंदिर के अन्दर प्रतिष्ठित कर दिया गया। और भैरव जोगियाणा से स्वाड़ी अपने मैती मंगशीरू के यहॉ आकर कुल देवता के रूप में स्थापित हो गया। समय व्यतीत होने के उपरान्त मंगशीरू के दोनों पुत्र बालमा, दानसी के भी दो–दो पुत्र हो गये। जिसमें बालमा के सन्ता, अषाडू दानसी के नत्थू, जेठू नाम के हो गये। कुछ समय के पश्चात भैरव देवता ने फिर बालमा और

दानसी के परिवार पर दोष कर दिया। भैरव के दोष निवारण के रूप में कुल में पैतृक रीति जो चली आ रही थी उसी के अनुसार बालमा नाम के कान फाडे गये उन्हे कनफटा जोगी (योगी) बनाया गया। फिर वह भैरव देवता के मुख्य अधिष्ठता के रूप में योगी के नियम व्रत का पालन करने लगे। वह पॉव पर चप्पल नही पहनते थे। शरीर पर भगुवे कपड़े धारण करते थे। कनफटे योगी के नियमानुसार भैरव के कमण्डल पर भिक्षाटन करते थे। खेतों में हल लगाना योगी के नियमानुसार उनके लिए वर्जित था। वह विभिन्न प्रकार के मंत्रों एवं शास्त्रीय ज्ञान से परिपूर्ण थे। समाज में इस प्रकार के अध्यात्मिक ज्ञान का वह प्रचार–प्रसार करते थे तथा लोगों की मंत्र विद्या से मदद करते थे। उन्हें विभिन्न प्रकार की मंत्र विद्याओं का ज्ञान था जैसे सांप बिच्छू, विष पौध, हाक, नजर आदि। वह सात्विक जीवन यापन करते थे। मांस मदीरा आदि का वह सेवन नही करते थे। सात्विक भोजन ही वह ग्रहण करते थे। सम्पूर्ण समाज में उन्हें उनकी योग विद्या के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। समाज में उनका मान–सम्मान अद्वितीय था। भिक्षाटन करना उनके लिए अनिवार्य था अगर वह भिक्षाटन नही करते थे तो इससे भैरव देवता दोष लग जाता था इसलिए भैरव की झोली, कमण्डल, चिमटा आदि के साथ भ्रमण करना अनिवार्य था। इससे भैरव देवता प्रसन्न रहता था। यह देवता सिद्ध प्रसिद्ध था। कहते है एक बार स्वाड़ी गॉव में नाथ सम्प्रदाय का जो पैतृक निवास (तिबारी) है उस घर में रात को चोर चोरी करने आया रात का समय था सब सोये थे, चोर जैसे ही उस तिबारी (घर) में प्रवेश करने लग गया वैसे ही भंयकर ऊॅची आवाज में भैरव का चिमटा बनजे लग गया। इससे सभी सोये लोग जाग गये और चोर भाग गया। उसी मुख्य आवास के अन्दर स्वाड़ी के नाथों की कुल देवी की प्राण–प्रतिष्ठित मूर्ति, खडग, शंख, चक्र, गदा भी स्थापित कर रखी है। यह देवी शक्ति सम्पन्न जगदम्बा है जो भैरव देवता को अपना आगे का वीर मानती है।

बालमा नाथ गृहस्थ योगी थे, जो पूरे नियम से नाथ सम्प्रदाय की सिद्धियों का पालन करते थे। क्यों नाथ सम्प्रदाय के नियम सामान्यतः अन्य सम्प्रदायों से भिन्न होते है। जैसे नाथ सम्प्रदाय में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो उसे जलाते नही है बल्कि समाधि के रूप में उसे बैठाया जाता है और फिर सुर्फुद–ए–खाक यानि जमीन के उसी रूप में दफना दिया जाता है उसके पश्चात उस मृत व्यक्ति की तेरवें दिन तेरवी होती है। तथा वर्ष के पश्चात वर्षी या वार्षिक श्राद्ध नही होता है। बालम नाथ वृद्ध अवस्था तक भी अपने नियमों का पालन करते रहे। वृद्ध अवस्था प्राप्त होने के उपरान्त 72 वर्ष की आयु में लगभग 1949 को इनकी मृत्यु हो गई। इससे पहले इनके छोटे भाई दानसी की मृत्यु हो चुकी थी। बालमा की मृत्यु पर समाज ने एक विशिष्ट योगी व्यक्ति को खो दिया था जिसकी समाज में कभी भरपाई नही हो पाई। वह समाज के अति प्रिय व्यक्ति थे। जो समाज को अपने ज्ञान, ध्यान, योग, विद्या मंत्र से सिंचित करते रहते थे। उन्हें रामायण, महाभारत, सुख सागर, प्रेम सागर, तांत्रिक योग विद्या का सम्पूर्ण ज्ञान था। जिसे वे समाज को बॉटते थे। बालमा नाथ की मृत्यु होने पर उन्हें स्वाड़ी गॉव में ही दफनाया गया और उसके ऊपर उनकी समाधि का निर्माण किया गया जो वर्तमान में भी विद्यमान है। यह स्थान नाथ सम्प्रदाय के लोगों के निवास के पास में ही है। यह एक अति विशिष्ट स्थान है क्योंकि इस स्थान पर नाथ सम्प्रदाय के कुल देवता भैरव का मंदिर भी स्थापित है। बालमा नाथ की मृत्यु के पश्चात भैरव देवता के मुख्य पश्वा के रूप बचन सिंह रहे जो सन्ता के

पुत्र है। यह देवता अपनी प्रचंड़ शक्ति से अवतरित होता था। उस समय भैरव देवता से सुफल प्राप्त करने हेतु दूर–दूर से लोग तथा भैरव की ध्याणियॉ आती थी। जा अपने कुल के लोगों एवं ध्याणियॉ को सदा सुखी रहने का आर्शीवाद देता था। तथा सबकी सुरक्षा में भैरव देवता समाहित रहता था। जब–जब भैरव देवता की पूजा होती थी। सम्पूर्ण नाथ परिवार एवं दूर–दूर से सभी भैरव की ध्याणियॉ आती थी। भैरव देवता से सुफल प्राप्त कर अपने ससुराल जाती थी। ध्याणियॉ अपने भैरव देवता हेतु भट्ट, बंगुर, मारछा, चावल भून कर लाती थी। जो भैरव देवता को भोग के रूप में चढ़ाया जाता था।

वर्तमान में भी स्वाड़ी गॉव में उसी स्थान पर अभी भी नाथ सम्प्रदाय के लोगों का भैरव मन्दिर है, जिसको अब नवीनीकृत कर दिया गया है। यह देवता पश्चादारी भैरव है संकट के समय हर किसी पर अवतरित हो जाता है। भैरव देवता की वर्तमान में पूजा अर्चना कम ही लोगों द्वारा की जाती है, सभी लोग सत्संग की तरफ चले गये और अपने कुल देवता को भूल गए जिसने कही पीढ़ियों से नाथ सम्प्रदाय को सुरक्षित रखा है। लेकिन स्वाड़ी में अभी भी कई परिवार श्रद्धा सुमन अपने भैरव देवता पर समर्पित करते है पूजा करते सम्मान करते है। कुल देवता का स्वरूप मानकर महादेव के रूप में अपने भैरव देवता को मानते जो सदैव अपने भक्त की इच्छा पूर्ण करता है जय भैरव नाथ की।

नाथ सम्प्रदाय के लोग भारद्वार गोत्र के माने जाते हैं। यह भारद्वार योगी नव नाथों एवं चौरासी सिद्धों में सबसे प्रतिष्ठित योगी (साधक) माना जाता है। नाथ सम्प्रदाय के लोग वर्तमान में विभिन्न स्थानों पर निवास कर रहे हैं जो निम्न है – जोगियाणा, देहरादून, ढुँग, ज्यूँदासू, फरसारी, सरकण्डा, स्वाडी, झनेत, गढ़, प्रतापनगर, टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, रूद्रप्रयाग, पौड़ी, हरिद्वार आदि विभिन्न स्थानों पर निवास कर रहे हैं। वर्तमान भौतिक वाद के युग ने नाथ सम्प्रदाय के नियमों में शिथिलता ला दी है। जिससे लोग अब पूरे नियम व्रतों का पालन नही कर पा रहे है। टिहरी गढ़वाल के ढुँग गॉव में निवास करने वाले नाथ सम्प्रदाय के लोग अभी भी विशिष्ट स्थान नाथ सम्प्रदाय में प्राप्त किए हुए है जो अपने आप में अति विशिष्ट है ऐसा अन्य स्थानों पर निवास करने वाले नाथ सम्प्रदाय के लोगों में नही देखा गया है। मैं ऐसे लोगों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ऐसे ही लोगों से नाथ सम्प्रदाय की पहिचान समाज में बनी रहेगी। जोगियाणा टिहरी के नाथ इस प्रकार से कर्मठ थे। 1972 में टिहरी डैम स्वीकृत होने से अब सभी गॉव जोगियाणा सहित भानियावाला जौली ग्रांट देहरादून विस्थापित हो गए है। जिससे जोगियाणा से भैरव देवता के मन्दिर को भी भानियावाला विस्थापित कर मन्दिर निर्माण किया गया है जो वर्तमान में भी अपने पूर्व रूप की तरह ही पहिचान बनाये हुए है। हमारे जीवन को कष्टों से मुक्त करने वाले हमारे कुल देवता भैरव और जगदम्बा अपनी कृपा दृष्टि चिरकाल तक हमारे वंश के ऊपर बरसाये रखना। साथ ही हमें ऐसी शक्ति प्रदान करना कि हम आपको विस्मरण भूल न सके और जो भी जन्म हमारा हो उस जन्म में हमें आपकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त हो। सारे नाथ भक्तजनों को मॉ जगदम्बा भवानी और सिद्ध भैरव की भक्ति में प्रमुदित हो जाओ, आहदित हो जाओ। नाचो! गाओ! इस वर्तमान के क्षण को मधुशाला बना लो। यह वर्तमान का क्षण हमारे लिए सुनहरा भविष्य बन जायेगा। समर्पित हो जाओं बिना किसी शर्त के और बिन मोल भक्ति में बिक जाओ। यह ईश्वर का ब्रहम स्वरूप है तब हमारा जीवन एक नये आनन्द का अनुभव करेगा।

''जय भैरव देवता की''

मंगशीरूनाथ से स्वाडी के नाथ सम्प्रदाय की वंषावली का उद्भव (1855 से 2015 तक)

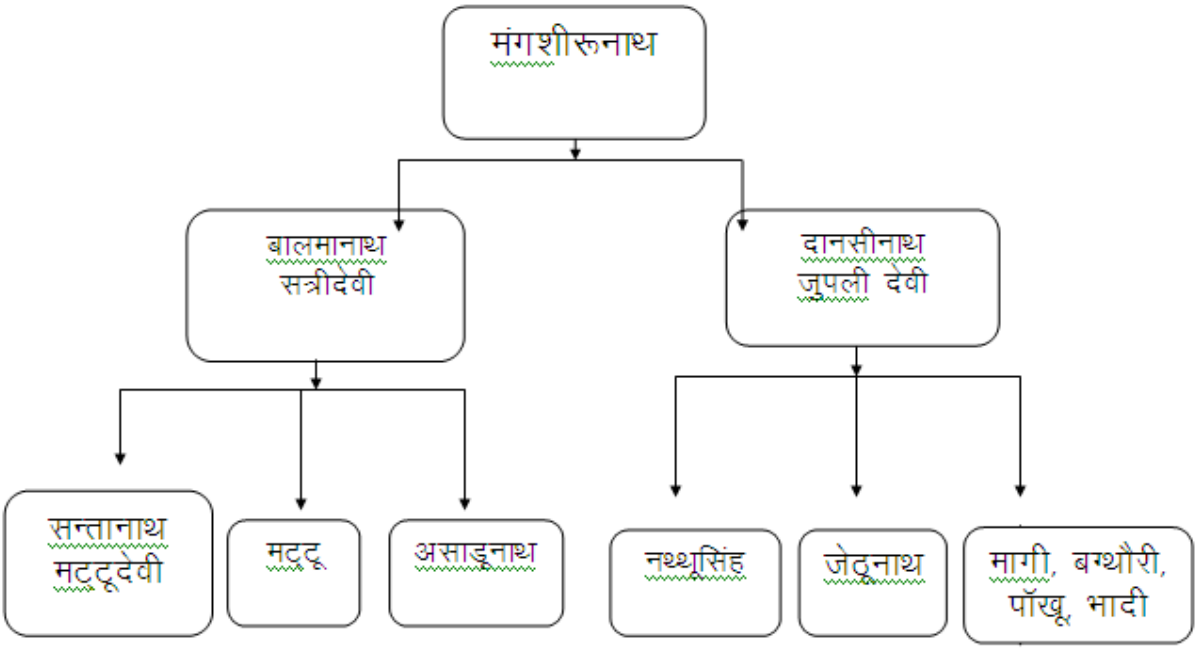

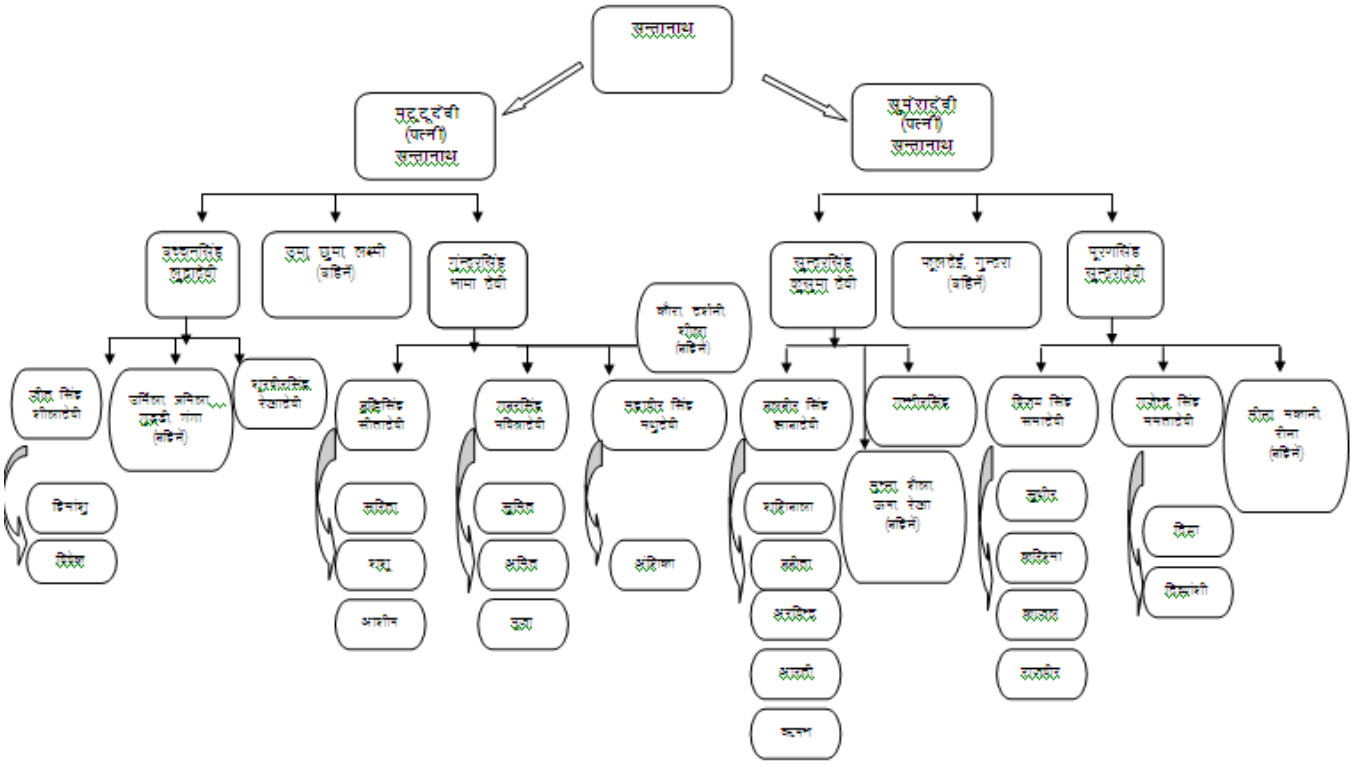

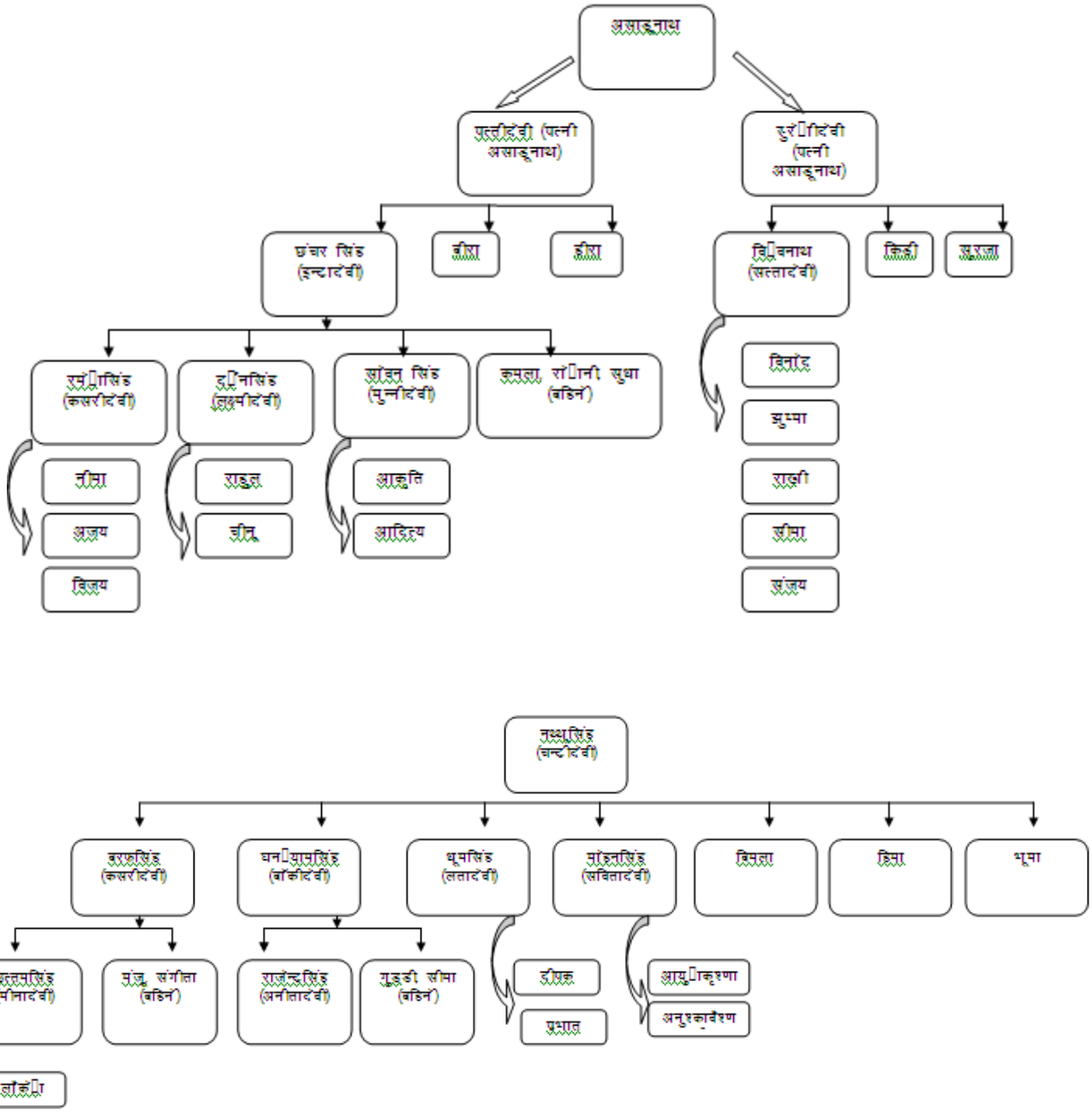

सांराश

भारत भूमि आदिकाल से ही सांस्कृतिक चेतना की अखाड–परम्परा में पलती रही है। ऐतिहासिक उथल–पुथल एवं अनेकानेक धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक आघात–प्रत्याघातों के बावजूद किसी न किसी रूप में यह परम्परा अक्षत बनी रही। इस परम्परा की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी नाथ–पंथी साधना है। नाथ–मत के सबल प्रचारक एवं प्रर्वतक गोरखनाथ ने पूर्ववर्ती सम्प्रदायों द्वारा विरवदित इस परम्परा को एक सार्थक–आयाम दिया जो देश–विदेश की राजनैतिक महाशक्यिों के मध्य निरन्तर पिसती भारतीय जनता की मनोवृति के अनुकूल सिद्ध हुई। नाथ–पंथियों

की हठयोग साधना से भारतीय आध्यात्मिक चिंतन परिपुष्ट हुई। इस चिंतन की उत्स–भूमि सिद्ध–पंथी वामाचारों की प्रतिक्रिया में उभरी थी। जो परवर्ती साहित्य एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना को बहुत गहराई में प्रभावित करती रही है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की प्रत्येक धड़कन पर नाथ–साहित्य की अमिट छाप परिलक्षित होती है। विशेषकर दादू, कबीर, गुरू नानक आदि सन्तों ने उस जमीन पर कला, धर्म, संस्कृति चिन्तन एवं साधनात्मक अनुभूतियों की अमिट कहानी लिख डाली।

नाथ साहित्य का स्वरूप उपदेशात्मक या धार्मिक है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं अन्य विद्वान इसी कारण इसे हिन्दी साहित्य के पृष्ठों पर अस्वीकार करते रहे। साहित्य की अनेकशः कलात्मक विद्याओं में तद्युगीन जीवन और जगत की पूरी छाप इस साहित्य में मिलती है। लोक–भावना एवं समष्टि–गत चितंन का पक्ष जीवन–मूल्य को पूर्णतः उकेरता है। अतः लोक जीवन और चितवृत्तियों का यह साहित्य, हिन्दी संसार के लिए एक सार्थक उपलब्धि है।

धन्यवाद ज्ञापन

मैने प्रस्तुत नाथ साहित्य एवं नाथ सम्प्रदाय के उदय का अनुसंधानात्मक सर्वेक्षण विभिन्न पौराणिक ज्ञाताओं से विभिन्न स्थानों पर जाकर जानकारी प्राप्त की है। मेरे इस अनुसंधानात्मक कार्य में सम्पर्क कर मेरी विशेष सहायता करने वालों के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मेरे इस अनुसंधानात्मक कार्य में सहयोगी :–

1. श्री छंछर सिंह नाथ ग्राम– स्वाडी, टिहरी (वरिष्ठ वयोवृद्ध पौराणिक ज्ञाता)
2. गुन्दर सिंह नाथ ग्राम– स्वाडी, टिहरी
3. श्री पूरण सिंह नाथ (अवकाश प्राप्त सुबेदार भारतीय सेना) ग्राम– स्वाडी
4. श्री बरफ सिंह नाथ ग्राम स्वाडी टिहरी (जागियाणा गॉव से परचित)
5. श्री धर्म सिंह नाथ ग्राम स्वाडी टिहरी
6. श्री जीत सिंह नाथ ग्राम स्वाडी टिहरी (अवकाश प्राप्त भारतीय जल सेना)
7. श्री बुद्वि सिंह नाथ (ऑचल दुग्ध विभाग) नई टिहरी
8. श्री रमेश सिंह नाथ (ग्राम प्रधान) ग्राम –स्वाडी, टिहरी
9. श्री घनश्याम सिंह नाथ ग्राम–स्वाडी, टिहरी
10. श्री बलवीर सिंह नाथ (पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य) ग्राम–स्वाडी, टिहरी
11. श्री धूम सिंह नाथ (ग्राम विकास अधिकारी) ग्राम–स्वाडी, टिहरी
12. श्रीमती चन्दरी देवी (वयोवृद्ध पौराणिक ज्ञाता) ग्राम–स्वाडी, टिहरी
13. श्रीमती इन्दरा देवी (वयोवृद्ध पौराणिक ज्ञाता) ग्राम–स्वाडी, टिहरी
14. श्रीमती भामा देवी ग्राम–स्वाडी, टिहरी

15. श्रीमती सुरेशी देवी (वयोवृद्ध पौराणिक ज्ञाता) ग्राम—स्वाडी, टिहरी

सन्दर्भ संकेत

1.आचार्य राम चन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास
डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद
2.हिन्दी साहित्य का आदिकाल (हिन्दी साहित्य का आदिकाल वीसलदेव रासो)
(I). डॉ पीताम्बर दत्त बडथ्वाल
(II). हर प्रसाद शास्त्री
(III). डॉ धर्मवीर भारती
(IV). पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
(V). राहुल सांकृत्यायन
(VI). डॉ मोहन सिंह
(VII). डॉ भगीरथ मिश्र
(VIII). राम बिहारी शुक्ल
(IX). मिस्टर ब्रिग्ज
(X).एस0 के0 चटर्जी
(XI). सर जार्ज ग्रियर्सन
(XII). डॉ सुकुमार सेन
(XIII). शिव कुमार शर्मा
(XIV). राम कुमार वर्मा

3.डॉ नागेन्द्र नाथ उपाध्याय पूर्व आचार्य हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
4.डॉ नागेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नागेन्द्र, डॉ सुरेशचन्द्र गुप्त
5.गढ़वाल का इतिहास – हरिकृष्ण रमूड़ी
सम्पादक – डॉ यशवन्त सिंह कठोच
भागीरथी प्रकाशन गृह बस अड्डा बौराड़ी
नई टिहरी, उत्तराखण्ड़।
6.प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
डॉ गंगा सहाय 'प्रेमी'
हरीश प्रकाशन मंदिर अस्पताल मार्ग आगरा – 282003 उत्तर प्रदेश